

विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याएं : कारण और सुझाव

डॉ. बलवीर सिंह जम्वाल, प्रिंसीपल
बी. के. एम. कालेज आफ एजुकेशन,
बलाचैर, जिला शहीद भक्त सिंह नगर,
पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

इस लेख में लेखक ने मुख्य तौर पर शिक्षा, विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याओं और इनके मुख्य कारणों को बताते हुए सुझाव दिए हैं। आम तौर पर देखा गया है कि सभी शिक्षा की गुणवत्ता पर बल दे रहे हैं सरकार भी शिक्षा की गुणवत्ता पर बल दे रही है परन्तु गुणवत्ता केवल तभी सम्भव है, जब शैक्षणिक समस्याओं का निवारण किया जाये। समस्या का निवारण तभी संभव है जब इसके मुख्य कारणों का पता लगाया जाये।

प्रस्तावना

शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है। शिक्षा ही इन्सान बनाने में सहायता करती है। शिक्षा को, एक सभ्य साथी की संज्ञा दी है जो मनुष्य को कदम-कदम पर सहायता करती है। शिक्षा की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा ही मनुष्य को समाज के लोगों द्वारा समायोजन करने में सहायता करती है। शिक्षा ही मानव में मूल्यों का विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव अपनी आजीविका कमाता है। शिक्षा को मानवीय विकास के पहलुओं में से एक महत्त्वपूर्ण पहलू माना जाता है। शिक्षा स्कूलों, कालेजों व विश्वविद्यालयों में दी जा रही है, लेकिन गुणवत्ता कम हो रही है। यह एक बड़ा विचारणीय विषय है। आजकल प्रतियोगिता का युग है। प्रत्येक विद्यार्थी को कदम-कदम पर प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है। जब तक हम विद्यार्थी की शैक्षणिक

समस्याओं का निवारण नहीं कर लेते तब तक गुणवत्ता की बात करना बड़ी दूर की बात होगी। शैक्षणिक समस्याओं का निवारण तब तक नहीं हो सकता जब तक इसके मुख्य कारणों का पता नहीं लगाया जा सके। इसलिए शैक्षणिक समस्याओं का निवारण करने के लिए इनके कारणों का पता लगाना अति आवश्यक है। तभी शिक्षा में गुणवत्ता आ सकती है।

शैक्षणिक समस्याओं के मुख्य कारण-

वैसे तो विद्यार्थियों को कई प्रकार की शैक्षणिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है परन्तु मुख्य तौर पर निम्नलिखित मुख्य कारण हैं :

1 गलत पढ़ाने की विधि - आम तौर पर देखा गया है कि शिक्षक कक्षा में पढ़ाता तो है लेकिन विद्यार्थियों को समझ में नहीं आता, इसका मुख्य कारण पढ़ाने की गलत विधि का प्रयोग होता है। शिक्षक विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार पढ़ाने की विधि का प्रयोग नहीं करता।



2 विद्यार्थी की गलत विधि - विद्यार्थी कई बार पढ़ने में अलग विधि का प्रयोग करते हैं जिस कारण उनको याद नहीं होता। अगर याद हो भी जाता है तो भूल जाते हैं।

3 एकाग्रता का अभाव : जिन विद्यार्थियों की एकाग्रता नहीं बनी रहती उनको पढ़ने में बड़ी समस्या आती है क्योंकि पढ़ाई में एकाग्रता होना अति आवश्यक है।

4 अस्वस्थ शरीर : जिन विद्यार्थियों का शरीर स्वस्थ नहीं रहता उन्हें पढ़ने व सीखने में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पढ़ाई के लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना अति आवश्यक है।

5 आत्मविश्वास की कमी : सफलता के लिए आत्मविश्वास होना अति आवश्यक है। जिस विद्यार्थी में आत्मविश्वास है वही सफलता की सीढ़ी चढ़ सकता है।

6 दिमाग का विकास कम होना : कुछ लोग या विद्यार्थी शारीरिक तौर पर देखने में बहुत ही स्वस्थ देखने को मिलते हैं परन्तु मानसिक तौर पर उनका विकास कम होता है। जिन विद्यार्थियों का दिमागी विकास कम होता है वह पढ़ाई में कुछ अच्छा नहीं कर पाते और अपने सहपाठियों के साथ पढ़ाई में नहीं चल सकते।

7 कठिन प्रतियोगिता, मानसिक दबाव व आलोचनात्मक दृष्टि कोण : आज का युग कठिन प्रतियोगिता का है जिसके कारण विद्यार्थी के ऊपर मानसिक दबाव बना रहता है, आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सामना करना पड़ता है जिसके कारण विद्यार्थी अपने आप को दबाव में पाता है और पढ़ नहीं सकता।

8 परीक्षा का दबाव : कई बार देखा गया है कि कुछ विद्यार्थी परीक्षा के समय अपने आप को

दबाव में पाते हैं क्योंकि उनमें आत्मविश्वास नहीं होता। इस दबाव के कारण पढ़ा या याद किया सब कुछ भूल जाता है।

9 स्मरण शक्ति का कम होना : देखने में यह भी आता है कि कुछ विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति कम होती है। वे ज्यादा समय तक किसी भी बात को याद रखने की क्षमता नहीं रखते, जिस कारण यह एक शैक्षणिक समस्या बन जाती है।

10 सख्त अनुशासन : कुछ स्कूलों या घरों में सख्त अनुशासन होता है जिस कारण विद्यार्थी उस अनुशासन में अपने आप को समायोजित नहीं कर पाते और पढ़ने व सीखने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

11 अपर्याप्त मनोरंजन : कई बार विद्यार्थी पहले अच्छे हैं लेकिन लगातार पढ़ना भी एक समस्या है जिस कारण विद्यार्थी का दिमाग थक जाता है और उसे भूलना शुरू हो जाता है। पढ़ाई के साथ मनोरंजन का होना भी ज़रूरी होता है जिसकी वजह से विद्यार्थी का दिमाग ताजा होता है।

12 विषयों को समझने की अयोग्यता : कई विद्यार्थी विषयों को समझने में अयोग्य होते हैं। विद्यार्थी जब तक विषयों को नहीं समझ पाते जब तक पढ़ाना व पढ़ना दोनों ही गलत है। कई विद्यार्थी कुछ विषयों से यूँ ही डरते हैं और अपनी अयोग्यता दिखाते हैं। बिना मेहनत से अयोग्यता को दिखाना आत्मविश्वास की कमी को उजागर करना होता है।

13 रट्टा लगाने की आदत : बहुत ही कम व्यक्ति विद्यार्थी हैं जो समझकर पढ़ते हैं, जो समझकर पढ़ते हैं और याद करते हैं। अधिकतर विद्यार्थी तो पेपरों के समय रट्टा लगाते हैं। कुछ विद्यार्थियों का रट्टा अच्छा होता है जिस कारण

वे पास हो जाते हैं परन्तु कुछ विद्यार्थियों का रट्टा कच्चा होता है जिस कारण वे भूल जाते हैं और घबरा जाते हैं। यही समस्या एक शैक्षणिक समस्या बनी जाती है।

14 ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई : कुछ विद्यार्थियों का मन व दिमाग भटकता ही रहता है जिस कारण वे सुचारु रूप से पढ़ नहीं पाते और याद करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

15 सीखने व लिखने में कठिनाई : कुछ विद्यार्थी सीखने व लिखने में कठिनाई महसूस करते हैं, जिस कारण वे पढ़ाई से नफरत करते हैं। यहां तक की पढ़ाई छोड़ देते हैं या अगर पास होते हैं तो कम प्रतिशत अंक हासिल करते हैं।

विद्यार्थियों के लिए सुझाव

1. परीक्षा की तैयारी योजना बनाकर करनी चाहिए।
2. पढ़ने व दुहराई के लिए समय सारणी बनानी चाहिए।
3. पढ़ने के बाद याद की गई पाठ्य वस्तु को लिखकर देखना चाहिए।
4. पढ़ने की शुरुआत करनी चाहिए, इसे शुरू करने की बात कभी नहीं सोचनी चाहिए।
5. दुहराई गुप बनाकर करनी चाहिए।
6. पढ़ाई विस्तारपूर्वक करनी चाहिए।
7. पढ़ते समय संक्षिप्त रूप में नोटस बनाने चाहिए।
8. कक्षा के वार्तालाप में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।
9. प्रत्येक सप्ताह के अंत में पढ़ाई का विश्लेषण करना चाहिए।
10. शब्दों के अर्थों को समझने के लिए शब्दकोष की सहायता लेना चाहिए।

11. प्रत्येक विषय के नोटस गहराई से पढ़कर बनाना चाहिए।

12. प्रत्येक पाठ को विस्तार से समझना चाहिए।

13. परीक्षा को मानसिक दबाव नहीं बनाना चाहिए।

14. पढ़ने के बाद थोड़ा बहुत खेलना चाहिए या घर का कार्य करना चाहिए ताकि मानसिक व शारीरिक सन्तुलन बना रहे।

15. पढ़ना प्रतिदिन चाहिए।

16. पढ़ने का स्थान एक ही होना चाहिए।

17. एक पाठ्य वस्तु का दूसरी पाठ्य वस्तु में उदाहरण के रूप में प्रयोग करना चाहिए।

18. लिखकर पढ़ने व याद करने की आदत डालनी चाहिए।

19. पढ़ते समय किसी भी प्रकार के मनोरंजन या शोर शराबे को त्यागना चाहिए।

20. पढ़ते समय कुछ समय के बाद कुछ खाना या पीना चाहिए।

21. पढ़ाई अपना शौक बनाकर करनी चाहिए।

22. विद्यार्थी को योग का सहारा लेना चाहिए।

23. विद्यार्थी को किसी प्रकार की गलत आदत नहीं डालनी चाहिए।

24. विद्यार्थी को अपना ध्यान केवल पढ़ाई पर केन्द्रित करना चाहिए।

25. पढ़ना, खेलना, व खाना समय-समय समय पर होना चाहिए।

26. जो बात समझ न आये उसके बारे में अपने शिक्षकों, माँ-बाप या बड़ों से पूछ लेना चाहिए।

27. जो भी काम करना हो मन लगाकर करना चाहिए।

28. अपने जीवन में अच्छे मूल्यों का विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए।



29. आत्मविश्वास की भावना अपने में जागृत करनी चाहिए।
 30. बड़ों का आदर व सत्कार करना तथा उनसे कुछ अच्छा सीख अपने जीवन में धरणा करने का शौक पैदा करना चाहिए।
 31. बड़े महान व्यक्तियों की जीवनियों को पढ़कर उनकी नकल करने की कोशिश करनी चाहिए।
 32. गुरुओं व माँ-बाप का सदैव दिल से सम्मान करना चाहिए।
 33. गलत दोस्तों व गलत रास्तों को हमेशा अलविदा कहने की क्षमता रखनी चाहिए।
 34. गलत शब्द का प्रयोग व धारण करने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए।
 35. हमेशा अपने माँ-बाप के स्वप्न को साकार करने का प्रयत्न करना चाहिए।
 36. धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने की आदत डालनी चाहिए व उनके उपदेशों को अपने जीवन में धारण करने की कोशिश करनी चाहिए।
 37. गलत रास्ते को महापाप समझना चाहिए।
 38. अच्छे कर्म पर विश्वास रखना चाहिए।
 39. अच्छे चरित्र का निर्माण करना चाहिए।
 40. सोच को सकारात्मक रखना चाहिए।
- क्या नहीं करना चाहिए :
1. देर रात्रि तक नहीं पढ़ना चाहिए।
 2. पढ़ते समय किसी भी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिए।
 3. पढ़ते समय किसी प्रकार का शोर-शराबा नहीं होना चाहिए।
 4. पढ़ना शौक से चाहिए, दबाव से नहीं।
 5. माँ-बाप और शिक्षकों की बातों को गम्भीरता से लेना चाहिए, मज़ाक में नहीं।
 6. स्कूल का गृह कार्य समय पर कर लेना चाहिए, इसमें कोताही नहीं बरतनी चाहिए।
 7. पढ़ते समय टेबलों और ग्राफों को छोड़ना नहीं चाहिए।
 8. खाना-पीना, उठना, खेलना, समय सारणी के साथ होना चाहिए। अपनी मर्जी या इच्छा से नहीं।
 9. अच्छे कार्य से शर्म नहीं करनी चाहिए।
 10. मन और दिमाग में पढ़ाई और अच्छे कार्य के अलावा कोई भी गलत बात मन में नहीं होनी चाहिए।
 11. अगर दिल या दिमाग में किसी प्रकार का प्रश्न है तो उसको शिक्षकों या माँ-बाप से पूछ लेना चाहिए दिल या दिमाग में छुपाकर नहीं रखना चाहिए।
 12. पढ़ने में किसी भी प्रकार की बाधा या विलम्ब या ब्रेक नहीं करना चाहिए।
 13. परीक्षण को दबाव या प्रेशर नहीं समझना चाहिए।
 14. जिस भी विषय को पढ़ना है लगातार पढ़ना चाहिए। विराम नहीं देना चाहिए।
 15. अपने जीवन में आलस्य को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए।
 16. अपने जीवन के उतार-चढ़ाव में सन्तुलन नहीं खोना चाहिए।
 17. समझकर पढ़ना चाहिए, रट्टा लगाने से बचना चाहिए।
 18. बुरे ख्यालों को मन से निकाल देना चाहिए।
 19. अपने जीवन में टालमटोल व दुरुपयोग इत्यादि शब्दों को कोई महत्त्व नहीं देना चाहिए।
 20. कर्म पर विश्वास करना चाहिए भाग्य पर नहीं।



21. किसी प्रकार का दोष दूसरों पर लगाने की आदत नहीं डालनी चाहिए।
 22. स्कूल को शिक्षा मन्दिर के अलावा कुछ नहीं समझना चाहिए।
 23. जीवन का कोई भी निर्णय अपने गुरुजनों और माँ-बाप की इज्जत का ख्याल दिमाग में रखकर लेना चाहिए, जल्दबाजी में नहीं।
- शिक्षक के लिए सुझाव :
1. बच्चों को उनके मानसिक स्तर के अनुसार पढ़ाना चाहिए।
 2. पढ़ाते समय ज्यादा से ज्यादा उदाहरण देकर पढ़ाना चाहिए।
 3. पढ़ाने की उपयुक्त व उचित विधि का प्रयोग करना चाहिए।
 4. गृह कार्य को प्रतिदिन चैक करना चाहिए।
 5. महीने में एक बार पी.टी.ए. की मीटिंग करनी चाहिए।
 6. बच्चों की पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करनी चाहिए।
 7. बच्चों को पढ़ाई का महत्त्व समझाना चाहिए।
 8. बच्चों के मानसिक तनाव को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।
 9. शिक्षक को चाहिए की वह तब तक अगले पाठ को न पढ़ाये जब तक विद्यार्थी पहले पाठ को अच्छी तरह न समझ ले।
 10. गृह कार्य में गलती अवश्य निकालें यदि हो तो।
 11. कक्षा का वातावरण शान्तिमय होना चाहिए ताकि हर विद्यार्थी का मन कक्षा में प्रवेश करने का हो।
 12. पढ़ाते समय मन एकाग्र रखने की सलाह बच्चों को दें।

13. धीरे-धीरे सीखने वाले विद्यार्थियों की अनदेखी न करें। उनके लिए अलग कक्षाएं भी लगायें।
14. पढ़ाते समय सभी वर्गों के बच्चों को ध्यान में रखकर पढ़ायें।
15. बच्चों में प्रतियोगिता की भावना का विकास करना चाहिए तथा ईर्ष्या की भावना से मुक्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।
16. विद्यार्थी की सन्तुष्टि को ही अध्यापक को अपनी सन्तुष्टि समझनी चाहिए।
17. कर्म का पाठ बच्चों को पढ़ाना चाहिए।
18. शिक्षक को बच्चों के सामने एक अच्छा माडल बनना चाहिए।
19. बच्चों में अच्छे मूल्यों का विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए।
20. बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।
21. तनाव मुक्त जीवन व्यतीत करने की सलाह देनी चाहिए।
22. बच्चों को स्कूल में होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
23. अच्छे नागरिक बनने का पाठ पढ़ाना चाहिए।
24. अच्छी आदतों को डालने में सहायता करनी चाहिए।
25. विद्यार्थियों को अच्छे व महान व्यक्तियों की जीवनियों को पढ़ने को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा खुद भी पढ़ी जीवनियों के उपदेश देने चाहिए।
26. अनुशासन और अनुशासित जीवन के महत्त्व को समझाना चाहिए।
27. शिक्षक को कक्षा में पाठ योजना के साथ जाना चाहिए।



28. शिक्षक को अपने बच्चों व विद्यार्थियों में कोई भेद नहीं करना चाहिए।
29. शिक्षक को अपने चरित्र पर पूरा ध्यान रखना चाहिए।
30. शिक्षक को समय पर अपनी कक्षा लेनी चाहिए तथा समय पर ही छोड़नी चाहिए।
31. शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ जात-पात, रंग भेद इत्यादि नहीं करना चाहिए सभी को एक नजर में रखना चाहिए।
32. शिक्षक को विद्यार्थियों की पढ़ाई के रिकार्ड की रिपोर्ट अपने हैडमास्टर या प्रिंसीपल और माता-पिता को देना चाहिए।

निष्कर्ष:-

आज का युग विज्ञान और टेक्नालोजी का है, जिसके कारण प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को चुस्त-दुरुस्त रहने की जरूरत है। विद्यार्थी को मार्गदर्शन की बहुत ही जरूरत है। यह मार्गदर्शन तभी सम्भव है यदि शिक्षक वर्ग भी अप-टू-डेट है। इसलिए शिक्षक को विद्यार्थी की समस्या व इसके कारण को समझना बहुत आवश्यक है तथा साथ में उसका सही मार्गदर्शन करना कर्तव्य है। इसलिए अध्यापक को अपना कर्तव्य पूरी तरह निभाना चाहिए और विद्यार्थी को माता-पिता व शिक्षकों द्वारा किये गए मार्ग-दर्शन पर चलना चाहिए। बिना किसी दबाव व मन के ऊपर किसी प्रकार का बोझ न रख कर अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से करनी चाहिए और अपने माँ-बाप व गुरुजनों के स्वप्न को पूरा करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मर्थी, एस. के.; एन.डी. फिलोसफीकल खण्ड सोशियोलोजिकल फाउंडेशन आफ एजुकेशन जालंधर, इन्टैकचुल पब्लिशर

2. भाटिया, के.के.; एन. डी., प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशन, लुधियाना, टण्डन पब्लिशर
3. भारद्वाज, तिलक राज ;1999, एजुकेशन ऑफ ह्युमन वेल्थुस नई दिल्ली, मित्रल पब्लिकेशन
4. नन्दा, एस.के.; 2007, फिलोसफीकल एण्ड सोशियोलोजिकल एण्ड बेसिस ऑफ एजुकेशन, जालंधर, मार्डन पब्लिशर
5. अग्निहोत्री के. के.;2009, परसपैक्टिव आन लाइफ, पंचकुला: बैटर बुक्स